Roll No. .....

(011/17-I)

13176

M. A. EXAMINATION

(For Batch 2017 & Onwards)

(First Semester)

HINDI

(Elective-II)

जयशंकर प्रसाद

Time : Three Hours *Maximum Marks : 70*

नोट : निर्देशानुसार सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

   (क) 'आंसू' काव्य में वर्णित रहस्यात्मक प्रकृति चित्रण पर प्रकाश डालिए ।

   (ख) अपने पिता के शासनकाल में स्कन्दगुप्त ने किन्हें और कैसे परास्त किया ?

   (ग) दूर समुद्र में नाव पर सवार युवक कौन था ? कामना उसे कहाँ ले गई ?

(घ) 'ममता' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए ।

(ङ) कंकाल उपन्यास की भाषा पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए । 2×5=10

2. 'आँसू' काव्य एक श्रेष्ठ विरह-काव्य है । इस विषय पर अपने विचार दीजिए ।

अथवा

गीतिकाव्य की दृष्टि से 'आँसू' काव्य की समीक्षा कीजिए । 15

3. 'कामना' नाटक के आधार पर 'कामना' का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

अथवा

स्कन्दगुप्त नाटक की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए। 15

4. 'आकाशदीप' कहानी संग्रह के आधार पर प्रसाद की कहानी कला पर प्रकाश डालिए ।

अथवा

'कंकाल' उपन्यास के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए । 15

5. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) मुरली मुखरित होती थी
मुकुलों के अधर विहँसते
मकरन्द भार से दबकर
श्रवणों में स्वर जा बसते ।

अथवा

चढ़ जाय अनन्त गगन पर
वेदना जलद की माला
रवि तीव्र ताप न जलाए
हिमकर का हो न उजाला ।

(ख) हाँ हाँ । अपनी सखी से दूर रह । केवल तू ही उस अग्नि का ईंधन बनकर सत्यानाश न फैला । महागर्व से मिलती हुई तरंगिणी के जल में चुटकी लेता हुआ, शीतल और सुगन्धित पवन इस देश में बहने दे । इस देश के थके कृषकों को विनोदपूर्ण बनाने के लिए प्रत्येक पथिक पर, कल्याण के सदृश यहाँ के वृक्षों को फूल बरसाने दे ।

अथवा

अमृत के सरोवर में स्वर्ण कमल खिल रहा था, भ्रमर वँशी बजा रहा था, सौरभ और पराग की चहल पहल थी । सवेरे सूर्य की किरणों उसे चूमने को लौटती थी । संध्या में सीतल चाँदनी उसे अपनी चादर से ढक देती थी । उस मधुर सौन्दर्य, उस अतीन्द्रिय जगत की साकार कल्पना की ओर मैंने हाथ बढ़ाया था, वहीं-वहीं स्वप्न टूट गया ।

(ग) गिरि पथ में हिम वर्षा हो रही है, इस समय तुम कैसे यहाँ पहुँचे ? किस प्रबल आकर्षण से तुम खिंच आए ।" खिड़की खोलकर एक व्यक्ति ने पूछा । अमल धवल चन्द्रिका तुषार से घनीभूत हो रही थी । जहाँ तक दृष्टि जाती है, गगन चुम्बी शैल शिखर, जिन पर बर्फ का मोटा लिहाफ पड़ा था, ठिठुरकर सो रहे थे ।

अथवा

पहाड़ जैसे दिन बीतते ही न थे । दुःख की रातें जाड़े की रातों से भी लंबी बन जाती हैं।

दु:खिया तारा की अवस्था शोचनीय थी । मानसिक और आर्थिक चिंताओं से वह जर्जर हो गई थी। गर्भ के बढ़ने से शरीर से भी क्रश हो गई थी। मुख पीला हो चला था, अब उसने उपवन में रहना छोड़ दिया । चाची के घर जाकर रहने लगी । 5×3=15